अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : चतुर्थ - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2017)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से कम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) नरदेव कहलाते हैं-

(क) चक्रवर्ती (ख) तीर्थंकर

(ग) साधु (घ) देव ( )

(b) समुच्चय पर्याप्त अनाहारक में योग होते हैं-

(क) 15 (ख) 11

(ग) 10 (घ) 01 ( )

(c) अवधिज्ञान की उत्कृष्ट स्थिति होती है-

(क) 66 सागर (ख) 66 सागर झाझेरी

(ग) 33 सागर झाझेरी (घ) 33 सागर ( )

(d) निर्दोष वस्तु सचित्त से ढँकी होने पर आहार लेना कौनसा दोष है-

(क) साहरिय (ख) दायग

(ग) पिहिय (घ) अपमाणं ( )

(e) चौथी नरक की आगति है।

(क) 5 (ख) 4

(ग) 3 (घ) 2 ( )

(f) भव्य द्रव्य देव कहलाते हैं-

(क) पर्याप्त जीव (ख) अपर्याप्त जीव

(ग) दोनों ही (घ) दोनों ही नहीं ( )

(g) देवियों में लेश्या होती हैं-

(क) 2 (ख) 6

(ग) 5 (घ) 4 ( )

(h) ज्ञान लब्धि में पर्याय की अपेक्षा शामिल अल्प बहुत्व में श्रुत अज्ञान के पर्याय किससे ज्यादा है-

(क)विभंग ज्ञान (ख) अवधि ज्ञान

(ग) श्रुत ज्ञान (घ) मति अज्ञान ( )

(i) ज्ञान लब्धि में सामायिक चारित्र के अलद्धिये में कितने ज्ञान या अज्ञान की नियमा भजना से होती हैं-

(क) 4 ज्ञान की भजना (ख) 5 ज्ञान की भजना

(ग) 5 ज्ञान व 3 अज्ञान की भजना (घ) 3 ज्ञान व 3 अज्ञान की भजना ( )

(j) दूसरों को परिताप देने हेतु लात आदि से प्रहार करना कहलाता है-

(क) मन संरंभ (ख) काय संरंभ

(ग) वचन संरंभ (घ) काय समारंभ ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) भवस्थ तिर्यंच में 2 ज्ञान, 2 अज्ञान की नियमा होती है। ( )

(b) भाव देव का उत्कृष्ट अंतर अनंत काल का है। ( )

(c) सूक्ष्म पृथ्वीकाय की आगति 74 की होती है। ( )

(d) विग्रह गति, अनाहारक और अयोगी केवली में मात्र कार्मण काय योग होता है। ( )

(e) अवधि ज्ञान का विषय रूपी और अरूपी द्रव्य दोनों होते हैं। ( )

(f) जो उपधि गृहस्थ से कारणवश ली जावे तथा कार्य पूर्ण होने पर लौटाई जावे, वह औपग्रहिक उपधि है। ( )

(g) उद्गम के दोष साधु के निमित्त से दाता को लगते हैं। ( )

(h) नारकी अपर्याप्त अनाहारक में 3 गुणस्थान पाये जाते हैं। ( )

(i) छोटी गतागत में जीव के 111 भेद बताये हैं। ( )

(j) अवेदी में 5 ज्ञान की भजना होती है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	देव पर्याप्त आहारक में लेश्या	(क) 03	.....
(b)	समुच्चय पर्याप्त में उपयोग	(ख) 82	.....
(c)	मनुष्य अपर्याप्त में गुणस्थान	(ग) 96	.....
(d)	तिर्यंच अपर्याप्त अनाहारक में उपयोग	(घ) 06	.....
(e)	भाव देव की आगति	(च) 72	.....
(f)	नरदेव की आगति	(छ) 16	.....
(g)	देवाधिदेव की जघन्य स्थिति (वर्ष में)	(ज) 12	.....
(h)	मनुष्य की आगति (छोटी गतागत से)	(झ) 111	.....
(i)	भवनपति की आगति	(य) 08	.....
(j)	वचन के दोष	(र) 05	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2 = (20)**

(a) मेरी एकाग्रता होने पर प्रायः शुभ भाषा नहीं बोली जाती। .....

(b) मुझे क्षुधावेदनीय की शान्ति के लिए ग्रहण किया जाता है। .....

(c) मेरे अलद्धिये में 3 अज्ञान की भजना होती है। .....

(d) मुझमें अपर्याप्त अवस्था में सास्वादन समकित नहीं होती है। .....

(e) मुझमें अपर्याप्त अवस्था में अवधि ज्ञान नहीं होता है। .....

(f) 'पाँच देव के थोकड़े' के अनुसार मेरा अन्तर नहीं होता है। .....

(g) मेरा संचिट्ठण काल जघन्य समय का होता है। .....

(h) मैं अपर्याप्त अवस्था में ही होता हूँ। .....

(i) मुझमें अप्रमादी साधु ही आते हैं। .....

(j) मैं अढ़ाई अंगुल कम अढ़ाई द्वीप के सन्नी पंचेन्द्रिय जीवों के मन के भावों को जानता देखता हूँ। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। (कोई 9) **9x2 = (18)**

(a) भव्य द्रव्य देव की आगति-गति लिखिए।

.....

.....

.....

(b) कार्मण काय योग कब-कब पाया जाता है।

.....

.....

.....

(c) सम्यग्दर्शन के लद्धिये व अलद्धिये में ज्ञान-अज्ञान की नियमा-भजना लिखिए।

.....

.....

.....

(d) **तीन विकलेन्द्रिय के अपर्याप्ता में ज्ञान-अज्ञान की नियमा-भजना लिखिए।**

.....

.....

.....

(e) **छड्डिय (छर्दित) दोष को लिखिए।**

.....

.....

.....

(f) **ईर्या समिति को परिभाषित कीजिए।**

.....

.....

.....

(g) **मति, श्रुत व अवधि अज्ञान का अंतर लिखिए।**

.....

.....

.....

(h) **आहार छोड़ने के प्रथम तीन कारण लिखिए।**

.....

.....

.....

(i) **उद्भिन्न दोष को लिखिए।**

.....

.....

.....

(j) **एषणा के 47 दोष संक्षिप्त में लिखिए।**

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : -(कोई-8) **8x4=(32)**

(a) **उद्‌गम के 16 दोषों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **स्थंडिल भूमि के कोई चार प्रकार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

© **'ज्ञान लब्धि का थोकड़ा' के दर्शन लब्धि के द्वार को समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **ज्ञान लब्धि के अनुसार, ज्ञान की पर्याय की अल्प बहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **मनुष्य के पर्याप्त व अपर्याप्त आहारक तथा अनाहारक में गुणस्थान, योग, उपयोग व लेश्या लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **छोटी गतागत के अनुसार पृथ्वीकाय की आगति व गति लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **नरदेव का उत्कृष्ट अंतर देशोन अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल कैसे होता है?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **'पाँच देव का थोकड़ा' के अनुसार संचिट्ठणकाल द्वार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(i) **ज्ञान लब्धि के थोकड़े में निम्न की नियमा-भजना लिखिए-**

(1) भवनपति के अपर्याप्त **(2) बाल पण्डित वीर्य का लद्धिया**

(3) श्रोत्रेन्द्रिय का अलद्धिया **(4) मनुष्य गतिक**

.....

.....

.....

.....

.....

.....